

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 7बी, इब्रानियों 7:1-8:13: बेहतर पौरोहित्य, बेहतर वाचा (भाग 2)

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

अध्याय 8 की शुरुआत में, लेखक यीशु की पुरोहित सेवकाई के बारे में अपनी व्याख्या जारी रखता है, जिसमें मुख्य विचार या मुख्य बिंदु, सेफेलॉन का स्पष्ट कथन है, जिस पर पूर्वगामी चर्चा चल रही है। यहाँ कही जा रही इन बातों के बारे में मुख्य बिंदु यह है। हमारे पास इतना महान महायाजक है, जो स्वर्ग में राजसी सिंहासन के दाहिने हाथ पर बैठा है, पवित्र स्थानों का सेवक है, और सच्चा निवास है जिसे प्रभु ने स्थापित किया है, और कोई मनुष्य नहीं है।

लेखक यहाँ तर्क को फिर से केन्द्रित कर रहा है, जो इस बिंदु से, मध्यस्थता के बेहतर स्थान पर यीशु के बेहतर पुरोहित बलिदान के विवरण को उठाएगा। लेखक श्रोताओं के लिए एक बार फिर से पुष्टि करता है कि वे उन महान लाभों का आनंद लेते हैं जिनका वर्णन लेखक ने किया है और इस प्रकार उनकी आशा के लिए आधार और ईश्वर के उपकार की तलाश जारी रखने के लिए अपनी पिछली प्रतिबद्धताओं में निवेश करना जारी रखना। दूसरा पहलू विशेष रूप से व्यावहारिक उपदेशों को बढ़ावा देता है जो अध्याय 4, श्लोक 14 से 16 और अध्याय 10, श्लोक 19 से 25 में केंद्रीय प्रवचन को घेरते हैं, जहाँ लेखक श्रोताओं को अपने ध्यान और अपनी ऊर्जा को एक दूसरे की ओर केन्द्रित करने और उस केंद्र पर केन्द्रित करने के लिए प्रोत्साहित करता रहता है जहाँ ईश्वर को उनकी आशा के स्थान के रूप में पाया जा सकता है।

अध्याय 8 की शुरुआत में, हम फिर से भजन 110, श्लोक 1 को सुनते हैं, जिसमें परमेश्वर द्वारा पुजारी नियुक्त किए जाने और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने की धारणाओं का संयोजन है। लेखक को भजन 110 में इन घटनाओं का क्रम महत्वपूर्ण लगा होगा। भजन 110, श्लोक 1 में, परमेश्वर इस आकृति को परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने के लिए स्वर्गीय स्थानों में आमंत्रित करता है।

थोड़ी देर बाद चौथी आयत में, परमेश्वर इस व्यक्ति को पुरोहिताई के एक नए क्रम में नियुक्त करता है। इब्रानियों के लेखक ने इस भजन को स्वर्गीय पुरोहिताई के सुझाव के रूप में पढ़ा है, जिसे इस दृश्यमान भौतिक सृष्टि के बजाय अदृश्य क्षेत्र में परमेश्वर के अपने सिंहासन के दाहिने तरफ से प्रयोग किया जाएगा। यह सच्चे निवासस्थान में प्रयोग किया जाएगा, जिसे प्रभु ने स्थापित किया है, न कि किसी मनुष्य ने।

ईसा पूर्व और ईसा पूर्व की पहली शताब्दियों के अन्य ग्रंथ भौतिक सांसारिक मंदिरों की आलोचना करने की प्रवृत्ति के साक्षी हैं, क्योंकि वे मानव हाथों द्वारा बनाए गए हैं। उदाहरण के लिए, हम इसे प्रेरितों के काम अध्याय 7 में स्टीफन के भाषण के अंत में या प्रेरितों के काम अध्याय 17 में अरियुपगुस के समक्ष पौलुस के बचाव भाषण की प्रक्रिया में पाते हैं। इब्रानियों के लेखक यहाँ आलोचना के इस विषय को स्पष्ट रूप से लाते हैं, और वह किसी भी सांसारिक

अभयारण्य की भौतिक मानवीय उत्पत्ति की तुलना स्वर्गीय अभयारण्य की शाश्वत दैवीय रूप से निर्मित उत्पत्ति से करते हैं जहाँ यीशु एक पुजारी के रूप में सेवा करने गए थे।

उस स्थान की प्रकृति किसी भी सांसारिक निवास से कहीं बेहतर है, क्योंकि उस स्वर्गीय निवास का निर्माता सांसारिक मंदिरों के निर्माताओं से बेहतर है। इस प्रकार लेखक मानव निर्मित बनाम ईश्वर निर्मित, दृश्यमान और सांसारिक बनाम अदृश्य और स्वर्गीय के बारे में सोचने की प्रवृत्ति पर जोर देता है ताकि उस बेहतर स्थान को रेखांकित किया जा सके जिसमें यीशु अपने पुजारीत्व का प्रदर्शन करता है। अगला श्लोक उन बलिदानों का परिचय देता है जो इस बेहतर पुजारी द्वारा बेहतर स्थान पर चढ़ाए जाते हैं, एक ऐसा विषय जिस पर अध्याय 9 और 10 में काफी चर्चा की जाएगी।

लेखक लिखते हैं कि हर पुजारी को भेंट और बलिदान चढ़ाने के लिए नियुक्त किया जाता है, जिसके कारण उसके लिए, यानी यीशु के लिए, कुछ चढ़ाने के लिए कुछ होना ज़रूरी था। पुजारी की भूमिका और ज़िम्मेदारी की परिभाषा इब्रानियों 5 पद 1 में दी गई पिछली परिभाषा को याद दिलाती है। टोरा, पेंटाटेच और मूसा की पाँच पुस्तकों के नुस्खों में पुजारियों का मुख्य पेशा बलिदान चढ़ाना है, इसलिए यीशु के पुजारी के रूप में कार्य करने के लिए, उसके पास कुछ चढ़ाने के लिए भी होना ज़रूरी था। लेखक बाद में इस बलिदान की प्रकृति, वारंट और प्रभावकारिता को विकसित करेगा।

अभी, वह एक अंतर्निहित प्रश्न का उत्तर देने के लिए आगे बढ़ रहा है। यदि यीशु स्वर्गीय स्थानों में नहीं होते, तो क्या वह पुजारी हो सकते थे? इसलिए, हम पद 4 में पढ़ते हैं, यदि वह पृथ्वी पर होते, तो वह पुजारी नहीं होते क्योंकि व्यवस्था के अनुसार भेंट चढ़ाने वाले लोग पहले से ही मौजूद हैं। यह अध्याय 8 में पद 1 और 2 के पहले के दावे के समर्थन में विपरीत तर्क है कि हम वास्तव में यीशु को स्वर्ग में पुजारी के रूप में देखते हैं।

इसके विपरीत, यदि यीशु अभी भी पृथ्वी पर होते, तो वे पुजारी नहीं होते। यहाँ पूर्वधारणा यह है कि यीशु कहीं न कहीं पुजारी हैं, और यदि वे पृथ्वी पर नहीं हैं, तो चूँकि वे टोरा द्वारा निर्धारित प्रकार के बलिदान चढ़ाने के योग्य नहीं होंगे, इसलिए उन्हें स्वर्ग में पुजारी होना चाहिए। लेखक द्वारा यहाँ दिए गए तर्क के बारे में, क्योंकि पहले से ही कानून के अनुसार उपहार चढ़ाने वाले लोग हैं, लेखक एक बार फिर इस तथ्य पर जोर दे रहा है कि यीशु लेवी के बजाय यहूदा के वंशज थे।

लेखक ने पहले ही अध्याय 7, श्लोक 14 में स्वीकार किया है कि यीशु लेवी से वंशावली वंश के आधार पर पुजारी के लिए टोरा की योग्यता से बाहर था। इस प्रकार, हम इस तर्क को इस अंश में विकसित होते हुए देखते हैं। चूँकि यीशु को एक पुजारी होना चाहिए, जैसा कि भजन 110 श्लोक 4 में घोषित किया गया है, और चूँकि वह सांसारिक अभयारण्य में पुजारी नहीं हो सकता है, जिसे टोरा द्वारा विनियमित किया जाता है, जिसमें पुजारियों की योग्यता के लिए अपने स्वयं के नियम हैं, इसलिए वह स्वर्गीय अभयारण्य में एक पुजारी है, एकमात्र अन्य अभयारण्य जो वैध रूप से एक ईश्वर से जुड़ा हुआ है।

स्वर्गीय पवित्रस्थान में यीशु के पुरोहितत्व की लेखक की घोषणा के जवाब में, हम पूछ सकते हैं कि, कौन सा स्वर्गीय पवित्रस्थान? इक्कीसवीं सदी के ईसाई आमतौर पर स्वर्ग के भूगोल के बारे में नहीं सोचते हैं, जैसा कि यह था, अपने स्वयं के अनुष्ठानों और साज-सज्जा के साथ एक मंदिर के संदर्भ में। लेकिन युग के मोड़ के आसपास की शताब्दियों में, स्वर्ग और उस स्थान के बारे में सोचना बिल्कुल भी असामान्य नहीं था जहाँ परमेश्वर पूरी तरह से निवास करता है, वास्तव में, जहाँ परमेश्वर पृथ्वी पर निवास करता है, उसका प्रतिबिंब है। जैसा कि इब्रानियों के लेखक आगे लिखते हैं, जो लोग व्यवस्था के अनुसार उपहार चढ़ाते हैं वे स्वर्गीय चीजों का एक नमूना और एक छाया प्रदान करते हैं।

जैसा कि मूसा को चेतावनी दी गई थी जब वह तम्बू को पूरा करने वाला था, उसने कहा, देखो तुम सब कुछ उसी मॉडल के अनुसार बनाओ जो तुम्हें पहाड़ पर दिखाया गया है। लेखक ने सांसारिक मंदिर की द्वितीयक प्रकृति, जो कि केवल एक प्रति है, और एक प्राथमिक स्वर्गीय मंदिर के अस्तित्व को साबित करने के लिए यहाँ निर्गमन 25, श्लोक 40 का पाठ प्रस्तुत किया है, जिसका सांसारिक मंदिर या तम्बू एक मॉडल है। यरूशलेम मंदिर या रेगिस्तानी तम्बू के लिए एक स्वर्गीय प्रतिरूप की धारणा हेलेनिस्टिक युग के यहूदी धर्म में आम थी, जैसा कि इस विश्वास के समर्थन में निर्गमन 25 40 की व्याख्या की अपील थी।

प्रथम हनोक में, प्रथम हनोक का एक भाग जो संभवतः तीसरी शताब्दी के अंत या दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत का है, हम पाते हैं कि लेखक स्वर्ग में दो कमरों वाले घर की बात कर रहा है, जिसके दूसरे कमरे में ईश्वर का सिंहासन है। इस प्रकार ईश्वर के स्वर्गीय निवास का लेआउट स्पष्ट रूप से ईश्वर के सांसारिक घर का प्रतिबिंब है जिसमें दो पवित्र स्थान हैं, एक पवित्र स्थान और एक और भी पवित्र स्थान जहाँ ईश्वर की उपस्थिति विशेष रूप से स्थित है। पहली शताब्दी ईस्वी की शुरुआत से एक हेलेनिस्टिक यहूदी पाठ, सुलैमान की बुद्धि भी इस रूपांकन की व्यापकता को दर्शाती है क्योंकि इसके लेखक ने सुलैमान के व्यक्तित्व को अपनाया है।

अध्याय 9, श्लोक 8 में परमेश्वर की स्तुति है, आपने कहा कि अपने पवित्र पर्वत पर एक मंदिर और अपने निवास के नगर में एक वेदी बनाएं, जो उस पवित्र तम्बू की नकल हो जिसे आपने शुरू से ही तैयार किया था। दूसरा बारूक, लगभग 100 ईस्वी से एक यहूदी सर्वनाश, यरूशलेम के भाग्य और नबूकदनेस्सर द्वारा इसके विनाश के बारे में बारूक को सांत्वना देते हुए भगवान को दर्शाता है, जो अपने मंदिर के साथ एक स्वर्गीय यरूशलेम की वास्तविकता की पुष्टि करता है, जिसे भगवान ने बहुत पहले एडम और मूसा को दिखाया था, एक सच्चा मंदिर जिसे गैर-यहूदी सेनाएँ छू नहीं सकती थीं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में स्वर्गीय मंदिर के साथ-साथ इसके विभिन्न साज-सामान के बारे में भी बहुत सारे संकेत हैं।

इब्रानियों के लेखक ने भी इस निवासस्थान, भगवान के राज्य में इस मंदिर के अस्तित्व में विश्वास किया, जिसे शुरू से ही तैयार किया गया था ताकि यह वास्तव में प्रोटोटाइप हो, जैसा कि उपदेशक खुद इब्रानियों 8.5 में कहते हैं, जिसका सांसारिक निवासस्थान प्रतिरूप है, जैसा कि लेखक अध्याय 9 पद 24 में कहेगा। यह नकल, प्रतिलिपि, छाया है। अब, जब हम प्रतिलिपि और छाया जैसे शब्दों का सामना करते हैं, तो हम स्वाभाविक रूप से वास्तविकता की प्लेटोनिक परिभाषाओं के बारे में सोच सकते हैं, जिसके अनुसार जो वास्तविक है वह विचारों के क्षेत्र में,

मानसिक निर्माणों के क्षेत्र में मौजूद है, जबकि दृश्यमान दुनिया में भौतिक प्रतिनिधित्व केवल प्रतिलिपियाँ या मॉडल हैं, उन आदर्श या वैचारिक प्रकारों के द्वितीयक प्रतिनिधित्व हैं।

लेकिन इब्रानियों का लेखक शायद ही प्लेटोवादी था। वह इस बात से सहमत होगा कि अदृश्य वास्तविकताएँ उनकी भौतिक नकल से बेहतर हैं, लेकिन वह इन मान्यताओं को यहूदी ब्रह्मांड विज्ञान के भीतर मजबूती से रखता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह दृश्यमान और भौतिक की तुलना विचारों के क्षेत्र से नहीं करता, बल्कि शाश्वत स्वर्गीय क्षेत्र से करता है, जो वर्तमान में अदृश्य है लेकिन हमेशा अदृश्य नहीं रहेगा।

वह इसे यहूदी-ईसाई लोगों की ऐतिहासिक रूप से सामने आने वाले छुटकारे और परलोक विद्या के नाटक में रुचि के अनुरूप एक लौकिक ढांचे के भीतर रखता है जो प्लेटो के विचारों के लिए पूरी तरह से विदेशी होगा। लेखक अब इस बिंदु पर श्लोक 6 में अपने शोध प्रबंध पर लौटता है और अध्याय 8, श्लोक 1 और 2 में पाए गए समान विचार को व्यक्त करने के लिए नए शब्दों का उपयोग करता है। लेकिन अब, उसे एक समान रूप से अधिक प्रतिष्ठित मंत्रालय प्राप्त हुआ है क्योंकि वह एक बेहतर वाचा का मध्यस्थ है, जिसे बेहतर वादों के आधार पर कानून बनाया गया था। यीशु की सेवकाई नई वाचा का एक प्रभाव है, जो स्वयं बेहतर वादों का एक प्रभाव है।

यह सब यीशु के याजकत्व के संबंध में परमेश्वर की शपथ और, विस्तार से, उससे जुड़ी नई वाचा द्वारा गारंटीकृत है। यह लेखक को अध्याय 8 के शेष भाग में अपने उपदेश के दौरान पुरानी वाचा के बारे में किए गए सबसे चौंकाने वाले दावों में से एक की ओर ले जाएगा। इब्रानियों 8 पद 7 से 13 में, लेखक अब यिर्मयाह 31 पद 31 से 34 को दोहराते हुए पुरानी वाचा को एक नई और अधिक प्रभावी वाचा के पक्ष में अलग करने के लिए शास्त्रीय प्रमाण प्रदान करता है। यिर्मयाह का यह पाठ उन बेहतर वादों के बारे में भी संकेत देता है, एक विषय जिसे लेखक इब्रानियों 9.1 से 10.18 में विस्तार से विकसित करेगा। इसके बाद इब्रानियों 8:7 से 13 में जो कुछ होता है, वह उस दावे की पुष्टि करता है जो लेखक ने पद 6 में किया था कि यीशु बेहतर वादों पर आधारित एक बेहतर वाचा का मध्यस्थ है।

साथ ही, यह तर्क के अगले भाग के लिए संक्रमण प्रदान करता है। लेखक यिर्मयाह के अपने पाठ को विपरीत तर्क के साथ प्रस्तुत करता है। वह लिखता है कि यदि पहला दोषरहित होता, तो दूसरे के लिए जगह की तलाश नहीं की जाती।

फिर, वह यिर्मयाह के पाठ को यह साबित करने के लिए पढ़ता है कि परमेश्वर ने स्वयं पहली वाचा को अप्रभावी मानकर अलग कर दिया था, और एक समय निर्धारित किया था जिसमें वह एक नई वाचा बनाएगा जो प्रभावी होगी और इस प्रकार बेहतर होगी। एक बार फिर, परमेश्वर के भविष्यवाणियों का कालक्रम महत्वपूर्ण साबित होता है। टोरा के नियमों के तहत लेवी पुरोहिती के संचालन के सदियों के बाद, यिर्मयाह के माध्यम से बोलते हुए, परमेश्वर को एक मौजूदा वाचा को अलग करते हुए देखा जाता है जो वह निकट भविष्य में अपने लोगों के साथ करेगा।

जैसे-जैसे लेखक आगे बढ़ता है, उनके साथ गलती खोजने के लिए, वह कहता है, देखो, दिन आ रहे हैं, प्रभु कहते हैं, और मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक नई वाचा बाँधूँगा,

उस वाचा के अनुरूप नहीं जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ उस दिन बाँधी थी जब मैंने उन्हें मिस्र देश से बाहर निकालने के लिए उनका हाथ थाम लिया था, क्योंकि वे मेरी वाचा में बने नहीं रहे, और मैंने उनकी परवाह करना छोड़ दिया, प्रभु कहते हैं। सस्वर पाठ का यह पहला भाग उन लोगों की परमेश्वर की निंदा प्रदान करता है जो पहली वाचा को उत्कृष्टता के साथ निष्पादित करने में विफल रहे। उनके साथ गलती खोजते हुए, वह कहता है, वे मेरी वाचा में बने नहीं रहे, और इसलिए मैंने उनके लिए कोई चिंता नहीं की, प्रभु कहते हैं।

लेखक का इरादा शायद अपने श्रोताओं को उस पीढ़ी का उदाहरण याद दिलाना है जिसे परमेश्वर ने मिस्र से बाहर निकाला था, लेकिन जिसने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और रेगिस्तान में मर गया, एक ऐसा उदाहरण जिसे उपदेशक ने पहले ही इब्रानियों 3:7 से 4:11 में विस्तार से विकसित किया है। यिर्मयाह के पाठ के दूसरे भाग में बेहतर वादों का पाठ खुद ही दिया गया है। यह वह वाचा है जिसे मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ स्थापित करूँगा, यहोवा कहता है।

मैं अपने नियमों को उनके मन में डालूँगा, और मैं उनके लिए परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे लिए लोग होंगे, और वे निश्चित रूप से प्रत्येक व्यक्ति को उसके साथी नागरिक और प्रत्येक अपने भाई या बहन को यह कहते हुए नहीं सिखाएँगे कि, प्रभु को जानो, क्योंकि वे सभी मुझे छोटे से लेकर बड़े तक जानेंगे क्योंकि मैं उनके कुकर्मों और उनके पापों के संबंध में दयालु रहूँगा। मैं निश्चित रूप से और कुछ याद नहीं रखूँगा। यिर्मयाह पाठ का यह भाग सबसे पहले ईश्वर की आज्ञाओं के आंतरिककरण, ईश्वर के नियमों के अनुसार जीने के लिए आंतरिक ज्ञान और प्रतिबद्धता की बात करता है।

लेखक ने आगे की व्याख्या में इस श्लोक पर कोई टिप्पणी नहीं की है, लेकिन यह पूरे धर्मोपदेश में उनके हित के साथ स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित होता है कि विश्वासियों को परमेश्वर को प्रसन्न करने और परमेश्वर से घृणा करने वाली चीज़ों से दूर रहने के लिए जीना चाहिए, अपने दिलों को परमेश्वर पर और परमेश्वर के अनुग्रह पर निष्ठापूर्वक भरोसा करते हुए और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए, पड़ोसी के प्रति प्रेम से जीना चाहिए, जो परमेश्वर के नियम का मूल है। यिर्मयाह से उद्धृत इस अंश में एक पंक्ति, और प्रत्येक व्यक्ति निश्चित रूप से अपने साथी नागरिक या पड़ोसी को नहीं सिखाएगा, यह कहते हुए, प्रभु को जानो, पहले तो इब्रानियों 5, श्लोक 11 से 14 में लेखक के उपदेश के साथ विरोधाभासी लग सकता है, जहाँ लेखक स्पष्ट रूप से विश्वासियों को एक-दूसरे को सिखाने के लिए प्रोत्साहित करता है। हालाँकि, वहाँ, लेखक के मन में एक-दूसरे के लिए ईसाई संस्कृति के विश्वदृष्टिकोण और लोकाचार को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है, जिसे वह पूरे धर्मोपदेश में कहते हैं।

हालाँकि, गहरे अर्थ में, लेखक इस बात की पुष्टि करेगा कि समुदाय के सभी सदस्य पवित्र आत्मा के अनुभव के माध्यम से प्रभु को करीब से जान चुके हैं, जिसका उल्लेख वह अध्याय 2, श्लोक 3 और 4, और अध्याय 6, श्लोक 4 और 5 दोनों में करता है। उन्हें केवल एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने की ज़रूरत है कि वे ईश्वर के ज्ञान के प्रति वफादार रहें जो उन्हें प्राप्त हुआ है। यिर्मयाह 31-34 का अंतिम दोहा है, मैं उनके कुकर्मों और उनके पापों के संबंध में दयालु रहूँगा, मैं निश्चित

रूप से उन्हें और याद नहीं रखूँगा। यह आगे आने वाले तर्क के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु के रूप में उभरता है।

वास्तव में, ये आयतें इब्रानियों के अध्याय 10, आयत 17 में फिर से दिखाई देंगी, जो कि इब्रानियों 9, 1 से 10, 18 के पूरे अध्याय का निष्कर्ष है। विवेक को अशुद्ध करने वाले इन पापों का निर्णायक निष्कासन का अर्थ होगा कि उपासक अनुग्रह और सहायता की पूर्ण अपेक्षा के साथ पवित्र परमेश्वर के पास जा सकते हैं, न कि इस अपेक्षा के साथ कि परमेश्वर की पवित्रता अशुद्ध अतिक्रमणकारी को जलाकर खुद को दूषित होने से बचाएगी। लेखक आगे के अध्यायों में यह विकसित करने के लिए आगे बढ़ेगा कि कैसे यीशु का खुद का बलिदान और परमेश्वर की आज्ञाकारिता में अपने खून की पेशकश पाप के इस निर्णायक शुद्धिकरण को प्रभावित करती है और परमेश्वर और यीशु के ग्राहकों के बीच आमने-सामने की पहुँच को संभव बनाती है, जो पुराने नियम के तहत परमेश्वर तक पहुँच पर निर्धारित सीमाओं के विपरीत है।

लेखक इस खंड का समापन निम्नलिखित विवादास्पद कथन के साथ करता है। नया कहने में, वह पहले को पुराना बताता है, और जो पुराना और अप्रचलित हो रहा है वह लुप्त होने के करीब है। लेखक यहाँ पाठ के निहितार्थों को स्पष्ट कर रहा है, विशेष रूप से यिर्मयाह द्वारा परमेश्वर द्वारा बनाई जाने वाली वाचा का वर्णन करने के लिए नए विशेषण का उपयोग।

दूसरे वाचा को नया कहते हुए, लेखक ने तर्क दिया कि पहले वाचा को पुराना बना दिया गया, जिसका दूसरा अर्थ है रद्द करना क्योंकि वाचा न केवल पुरानी हो गई, बल्कि परमेश्वर ने इसे पुराना बना दिया। लेखक ने इस बारे में एक अतिरिक्त अनुमान जोड़ा है कि अप्रचलित और वृद्ध होने का क्या अर्थ है। इसका अर्थ है कि इस वास्तविकता से कुछ गायब होने की ओर अग्रसर है।

इस तरह, लेखक पुरानी वाचा को भौतिक, दृश्यमान सृष्टि से जोड़ता है जो समाप्त हो रही है और यीशु के माध्यम से मानव और ईश्वर के बीच स्थापित रिश्ते को वाचागत संबंधात्मक बंधन के रूप में प्रस्तुत करता है जो स्थायी रहेगा, जो संबोधित करने वालों के लिए इस रिश्ते को बनाए रखने के मूल्य को फिर से बढ़ाता है, जिनमें से कुछ इसे छोड़ने के लिए लुभाए जा सकते हैं। लेखक ने अपने श्रोताओं के लिए अध्याय सात और आठ में कई तरीकों से अपने पादरी लक्ष्यों को आगे बढ़ाया है। सबसे पहले, वह श्रोताओं पर यीशु के अतुलनीय सम्मान को प्रभावित करना जारी रखता है, यहाँ यह स्थापित करने के माध्यम से कि ब्रह्मांड के ईश्वर के आदेश में यीशु का स्थान ईश्वर के सांसारिक निवास और मंदिर में ईश्वर की सेवा करने के सम्मान के साथ निवेशित पुजारियों से कहीं ऊपर और परे है।

हारून की वंशावली और लेवी की व्यापक वंशावली वास्तव में परमेश्वर के पवित्र इतिहास में सम्मानित हैं, लेकिन यीशु और उनके पुरोहिती आदेश उनके ऊपर एक स्तर पर खड़े हैं। लेखक ने, शास्त्रीय अधिकार के आधार पर, उन अदृश्य चीजों की वास्तविकता को भी स्थापित किया है जिनके बारे में वह बात करता है। वह स्वर्गीय मंदिर में मेल्कीसेदेक के आदेश के बाद यीशु को एक उच्च पुजारी के रूप में स्थापित करने की बात करता है, जिसका यरूशलेम में दृश्यमान मंदिर एक मॉडल है।

यह सिर्फ एक और तरीका है जिससे लेखक श्रोताओं को ईश्वर के अदृश्य, अमूर्त क्षेत्र की कल्पना करने और उसे वास्तविक रूप में देखने के लिए प्रेरित कर रहा है, उदाहरण के लिए, भूगोल और वास्तुकला उतनी ही वास्तविक है जितनी कि वे अपने शहरों में अपने आस-पास संगमरमर और चूना पत्थर से बनी कोई भी चीज़ देखते हैं। ईश्वर का क्षेत्र भी उतना ही वास्तविक है। उन्होंने यिर्मयाह से अपील के माध्यम से यह भी प्रदर्शित किया है कि इस नए पुजारी के पक्ष में पहली वाचा के साथ-साथ उसके विधिवत नियुक्त और विनियमित पुजारी को अलग रखने का ईश्वरीय निर्णय है।

यह दावा करना निश्चित रूप से एक अत्यधिक विवादास्पद बात है, इसलिए नहीं कि इब्रानियों के लेखक अपनी स्थिति के बारे में स्पष्ट नहीं हैं, बल्कि इसलिए कि होलोकॉस्ट के बाद से हमारे संदर्भ में एक बहुत बड़ा धार्मिक बदलाव हुआ है। यहूदी-विरोधी भावना के कारण जो भयावहताएँ सामने आईं, उनके सामने कई धर्मशास्त्रियों ने दो-वाचा धर्मशास्त्र को बढ़ावा देना शुरू कर दिया, जिसके अनुसार मूसा की वाचा यहूदी लोगों के लिए रास्ता बनी रही और नई वाचा गैर-यहूदियों के लिए रास्ता थी, जिनमें से प्रत्येक ईश्वर की दृष्टि में समान रूप से वैध और क्रियाशील है। जबकि यह 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में सोचने का एक प्रमुख तरीका बन गया है, यह इब्रानियों के लेखक का दृष्टिकोण नहीं था, न ही यह पॉल का दृष्टिकोण था, जैसा कि अक्सर दावा किया जाता है, जो अपने लोगों द्वारा अपने मसीहा को स्वीकार करने में विफलता से इतना दुखी था कि वह खुद को शापित और ईश्वर से अलग होने की कामना कर सकता था यदि यह उस प्रवृत्ति को उलट देता।

ये सभी बिंदु मिलकर लेखक के व्यापक लक्ष्य को पूरा करते हैं, जो उसके श्रोताओं के लिए यीशु के मूल्य और इस यीशु के साथ जुड़े रहने के मूल्य को पुष्ट करता है, बजाय इसके कि उसके श्रोताओं को यह सोचने की अनुमति दे कि उनके लिए यीशु के साथ जुड़े रहना किसी तरह से नुकसानदेह है, क्योंकि उनके पड़ोसियों द्वारा उन पर दबाव डाला गया है और क्योंकि उनके पड़ोसी की शत्रुता के परिणामस्वरूप उन्होंने क्या खोया है। यीशु में, उनके पास एक अधिक प्रतिष्ठित पुरोहित वंश का पुजारी है, जिसका पुरोहित कार्य एक दिव्य शपथ द्वारा समर्थित है जो इसकी स्थायी वैधता को आश्वस्त करता है, एक पुजारी जो एक विश्वसनीय मध्यस्थ के रूप में बेहतर योग्यता रखता है, जो कभी नहीं मरेगा, जो पाप करने के लिए उत्तरदायी नहीं है और इस प्रकार उस देवता को अलग नहीं करता है जिसके पक्ष में उसे मध्यस्थता करनी चाहिए, एक पुजारी जो एक बेहतर स्थान, ईश्वर के शाश्वत क्षेत्र, सृष्टि से परे सच्चे पवित्रतम में अपना कार्य निष्पादित करता है, और एक पुजारी जो अपराध को निर्णायक रूप से हटाने और ईश्वर और ईश्वर की आवश्यकताओं के अंतरंग ज्ञान को लाने से जुड़ी एक बेहतर वाचा की मध्यस्थता करता है। उत्पत्ति 14 में मलिकिसिदक तक, तथा टोरा में तम्बू में परमेश्वर की सेवा और उसके कर्मचारियों के लिए मोज़ेक निर्देशों तक, तथा दाऊद और फिर यिर्मयाह के माध्यम से कहे गए परमेश्वर के वचनों तक, लेखक श्रोताओं को उनकी स्थिति पर एक नया परिप्रेक्ष्य भी देता है, जो दृढ़ता को सुगम बनाने के लिए भी है।

यदि वे केवल पिछले पाँच वर्षों या 10 वर्षों या शायद 20 वर्षों में अपने जीवन की दिशा को देखें, जब से उन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया है, तो उन्हें अपनी स्थिति के बारे में बहुत कम जानकारी होगी। हालात बेहतर होने के बजाय बदतर हो गए हैं, लेकिन यदि वे इस लंबे दृष्टिकोण को लेते हैं,

जिसे लेखक मानवता के साथ परमेश्वर के व्यवहार के दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर रहा है, ताकि वह अपने लिए लोगों का निर्माण कर सके, तो वे उल्लेखनीय विशेषाधिकार के बिंदु पर खड़े हैं, क्योंकि परमेश्वर ने अब उन बेहतर चीजों को लाया है, जिन्हें परमेश्वर पिछली चीजों की विफलता के बाद से तैयार कर रहा था। ऐसी चीजें जिनकी ओर राजा दाऊद ने ध्यान दिया था, ऐसी चीजें जिनके बारे में यिर्मयाह नबी केवल पहले से ही बोल सकता था।

इसलिए, इस दृष्टिकोण से, वे इतिहास में जिस स्थान पर हैं, वह वास्तव में एक ईर्ष्यापूर्ण स्थान है, न कि किसी भी तरह से नुकसानदेह स्थान जैसा कि उनके पड़ोसी उन्हें सोचने पर मजबूर कर सकते हैं। एक बार फिर, इब्रानियों का वचन हमारी स्थिति में भी हमें चुनौती देना जारी रखता है। वही उद्धार का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य जो लेखक अपने पाठकों को ईश्वर तक पहुँच के बारे में प्रदान करता है जिसका वे आनंद लेते हैं, हमें भी सावधान करना चाहिए जो मसीह की मृत्यु के दो सहस्राब्दी बाद जी रहे हैं कि इस पहुँच को हल्के में न लें।

ईश्वर के प्रति मानवता के दृष्टिकोण के लिए मसीह में जो हासिल हुआ वह एक अविश्वसनीय क्षण था जिसने मनुष्यों के प्रतिक्रिया करने के तरीके को बदल दिया और उन्हें अंतिम तरीके से ईश्वर के पास जाने के योग्य बनाया। इसलिए, सर्वशक्तिमान के सामने एक साथ आकर ईसाई पूजा करना कोई काम नहीं है, कोई दायित्व नहीं है जो हमारे रविवार को खा जाता है, बल्कि एक आश्चर्यजनक विशेषाधिकार है। ईसाई को न केवल किसी भी समय पूजा और प्रार्थना में ईश्वर के करीब आने में सक्षम होने का आश्वासन दिया गया है, बल्कि मृत्यु के बाद या मसीह के दूसरे आगमन पर ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के योग्य होने का भी आश्वासन दिया गया है, यह एक ऐसा लाभ है जो यीशु से पहले की अवधि में किसी के लिए भी अकल्पनीय था।

इसलिए, लेखक हमें चुनौती देता है कि हम यीशु द्वारा हमारे लिए जीते गए विशेषाधिकार को अपने मन में जीवंत रखें, जैसे कि यह वास्तव में हमारे लिए नया और ताज़ा था और दो सहस्राब्दी पुराना नहीं था। इस पूरे खंड में और विशेष रूप से अध्याय 8 में, लेखक हमें याद दिलाता है कि भौतिक दृश्यमान सृष्टि कम मूल्य की है और ईश्वर के शाश्वत, अदृश्य क्षेत्र में मौजूद चीज़ों की तुलना में कम सुरक्षित वास्तविकता है। यह एक और बिंदु है जिस पर लेखक हमें अनुभववाद और भौतिकवाद के प्रति हमारी प्रतिबद्धता से बाहर निकालता है, जो हम देख सकते हैं, महसूस कर सकते हैं और सुन सकते हैं, उस पर अधिक भरोसा और परवाह करते हैं, बजाय इसके कि जो हमारी इंद्रियों के अवलोकन से परे रहता है।

अपने समय, ऊर्जा और निवेश को ईश्वर और धन के बीच बांटने के बजाय पूरे दिल से मसीह का अनुसरण करने के लिए लेखक ने अपने उपदेश की शुरुआत और अंत में जो बताया है, उस पर ध्यान देना आवश्यक है। दृश्यमान भौतिक दुनिया अविश्वसनीय है, जबकि यीशु एक विश्वसनीय आधार है जिस पर वास्तव में सुरक्षित जीवन का निर्माण किया जा सकता है। इस दुनिया के पुरस्कार ईश्वर के वादों की फुसफुसाहट से अधिक वास्तविक लग सकते हैं, लेकिन जब तक हम इस तरह से सोचते और मामलों का मूल्यांकन करते रहेंगे, तब तक हमारे दिल में एकनिष्ठता की कमी रहेगी जो शिष्यत्व को उसकी शक्ति, अखंडता और आनंद देती है।

लेखक हमें यह समझने में सहायता करने का प्रयास करता है कि परमेश्वर की शपथ कभी असफल नहीं होगी, कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं विश्वासियों तक पहुंचेंगी, और कि यीशु उन लोगों को कभी निराश नहीं करेगा जो उस पर भरोसा करते हैं; इसलिए, लेखक हमें इन प्रतिज्ञाओं और यीशु के वचन के इर्द-गिर्द अपने जीवन को पूरी तरह से बनाने में सहायता करने का प्रयास करता है।